बिहार के मुजफ्फरपुर में विकेन्द्रीकृत ठोस अपशिष्ट प्रबंधन

पृष्ठभूमि

15 दिसंबर, 2016 को मुजफ्फरपुर में 'स्वच्छता स्वास्थ्य समृद्धि' कार्यक्रम की शुरुआत हुई थी जिसके तहत शहर में ठोस अपशिष्ट के बेहतर प्रबंधन के लिए सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट (सीएसई), मुजफ्फरपुर नगर निगम (एमएमसी) और आईटीसी लिमिटेड के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए थे। यह कार्यक्रम मूल स्थान पर अपशिष्ट पदार्थों के पृथक्करण और प्रसंस्करण की प्रक्रिया को अपनाकर मुजफ्फरपुर को एक स्वच्छ शहर में बदलने में मदद कर रहा है।

कर्यक्रम में शामिल हितधारक

सीएसई मुजफ्फरपुर शहर में विकेन्द्रीकृत अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली की शुरुआत करने तथा इसे कार्यान्वित करने और इस मॉडल को बिहार के अन्य शहरों में अपनाया जाना सुनिश्चित करने के लिए बिहार के शहरी विकास विभाग, एमएमसी और वेल-बीइंग आउट ऑफ वेस्ट इनिशिएटिव (आईटीसी प्रा.लि. द्वारा सीएसआर पहल) के साथ मिलकर काम कर रहा है।

मुजफ्फरपुर के अपशिष्ट संबंधी आंकड़े

मुजफ्फरपुर शहर के 49 वार्डों को दस मंडलों में बांटा गया है। प्रत्येक वार्ड में 1500-3000 मकान हैं। एमएमसी द्वारा उपलब्ध जानकारी के अनुसार, मुजफ्फरपुर में प्रतिदिन 170 मीट्रिक टन कचरा उत्पन्न होता है जिसमें प्रति व्यक्ति कचरा उत्पादन लगभग 300 ग्राम है। सीएसई के अनुमान के अनुसार, प्रति व्यक्ति कचरा उत्पादन 600-800 ग्राम के बीच है।

मुजफ्फरपुर में विकेन्द्रीकृत अपशिष्ट प्रबंधन के लिए उठाए गए कदम

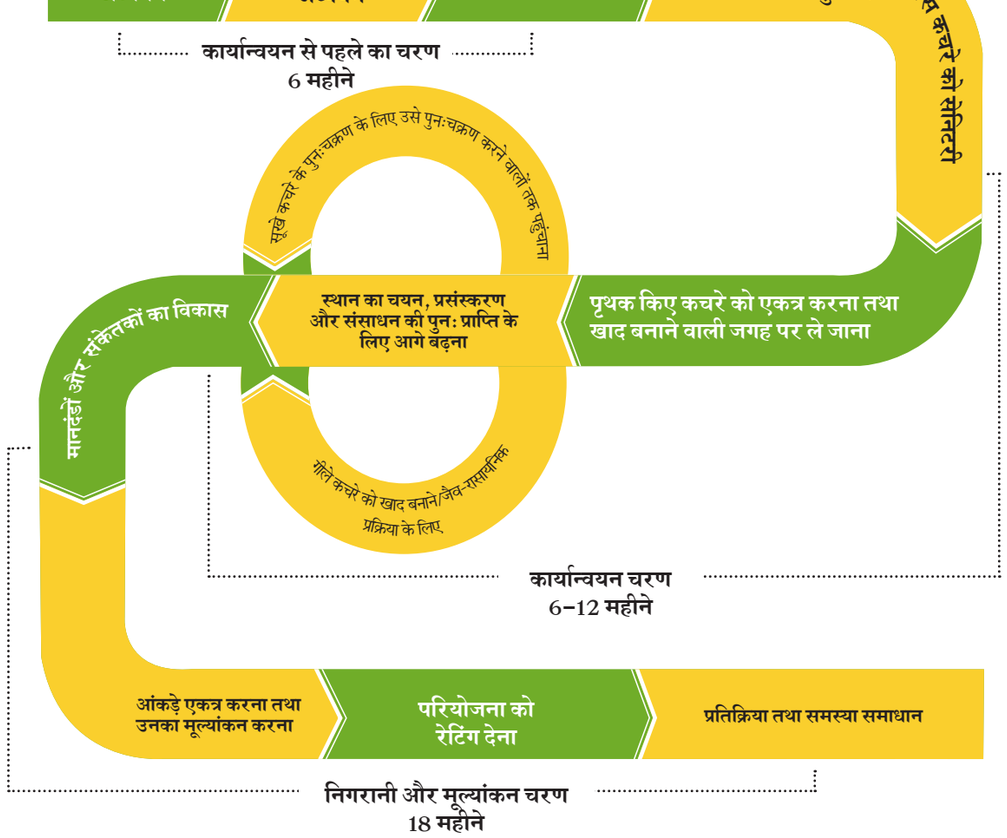

कचरे के पृथक्करण के बारे में जागरुकता और प्रचार

शहर से चुने गए 70 स्वयंसेवियों को वहां रहने वाले लोगों को गीले, सूखे और घरेलू परिसंकटमय अपशिष्ट को अलग-अलग करने के संबंध में शिक्षित करने के लिए घर-घर जाकर प्रचार करने की जिम्मेदारी दी गई है। स्वयंसेवक अपशिष्ट उठाने वाले के साथ जाते हैं तथा वे कचरे के पृथक्करण के स्तर की जांच करते हैं। उनका काम यह सुनिश्चित करना है कि समय के साथ यह पृथक्करण नागरिकों की आदत बन जाए। अब तक 34 वार्डों में रहने वाले लोग तथा सभी 49 वार्डों के वाणिज्यिक प्रतिष्ठान पृथक किया हुआ कचरा दे रहे हैं।

एमएमसी ने इन वार्डों के सभी लोगों को अच्छी गुणवत्ता के प्लास्टिक के दो डिब्बे दिए हैं (हरा गीले कचरे के लिए और नीला सूखे कचरे के लिए)। दुकानों जैसे वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों में मुख्य रूप से सूखा कचरा होता है और वे इसे गत्ते के बड़े डिब्बों में रखते हैं। किसी भी तरह के जैव रासायनिक, सेनिटरी और हानिकारण कचरे को सूखे और गीले कचरे से अलग दिया जाता है।

जिन परिवारों को कचरे के डिब्बे उपलब्ध कराए गए हैं उनका ब्यौरा नोट किया जाता है तथा उनके कचरे के पृथक्करण का रिकॉर्ड रखने के लिए वहां स्टीकर चिपकाए जाते हैं। पृथक्करण की प्रक्रिया के बारे में जानकारी देने के लिए नागरिकों को पर्चे बांटे जाते हैं।

कचरा इकट्ठा करना, उसे उचित स्थान पर ले जाना तथा उसका प्रसंस्करण

अलग किए हुए कचरे को एकत्र करने तथा निपटान स्थल तक ले जाने के लिए एमएमसी के पास कचरे के विभाजन हेतु अलग-अलग हिस्से वाले 20 टिपर, विभाजन वाले 20 और बिना विभाजन वाले 30 ट्रेक्टर, 120 तिपहिया साइकिलें और 50 ठेला गाड़ियां हैं।

प्रतिदिन सुबह 6 से 10 बजे के बीच कूड़ा एकत्र किया जाता है। 34 वार्डों से प्रतिदिन लगभग तीन से चार टन गीला कचरा एकत्र किया जाता है तथा खाद बनाने वाली जगह तक ले जाया जाता है। एमआरडीए कैंपस के पास स्थित जगह में 40 पिट्स हैं जिनमें से प्रत्येक की क्षमता 1000 किग्रा. है जबकि चांदवाड़ा में 66 पिट्स हैं। एमएमसी शहर में ऐसे पांच और विकेंद्रीकृत खाद केंद्र स्थापित करने की योजना बना रही है।

कचरा इकट्ठा करने वाले (औपचारिक और गैर-औपचारिक) स्थानीय कबाड़ियों (सूखा कचरा फ्रेंचाइजी) को पुनःचक्रण योग्य सूखा कूड़ा बेचकर हर महीने लगभग 2,000 रुपए तक कमा रहे हैं। कम कीमत वाला सारा प्लास्टिक तथा कई परतों वाली पैकेजिंग एमआरडीए वाले अधिष्ठान में रखे जाते हैं। इसके 8-10 टन का होने के बाद इसे फिर से सह-प्रसंस्करण के लिए भेज दिया जाता है।

परिणाम

मुजफ्फरपुर में अपनाया गया मॉडल एक विशेष मॉडल है जो किफायती होने के साथ-साथ कचरे से आमदनी भी करा रहा है। इस कार्यक्रम को जनता का काफी समर्थन मिला है जहां प्रतिदिन 80 प्रतिशत से अधिक कचरा इसके मूल स्थान पर ही अलग-अलग किया जा रहा है। मुजफ्फरपुर में सफाई में काफी सुधार हुआ है जहां गलियां और सार्वजनिक स्थान पहले से ज्यादा साफ दिखाई देते हैं। कूड़े के ढेर कम दिखते हैं तथा कूड़ा जलाने की घटनाएं भी कम होती हैं। कचरे के पृथक्करण से कचरा इकट्ठा करने वालों की आजीविका में भी सुधार हुआ है। खाद की बिक्री से एमएमसी को भी राजस्व प्राप्त होगा। स्वच्छ सर्वेक्षण 2017 और 2018 (राज्य रैंकिंग) में शहर की रैंकिंग में भी सुधार हुआ है तथा इसे स्मार्ट शहरों की सूची में जगह मिली है। मुजफ्फरपुर बिहार का पहला ऐसा शहर है जिसके ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के अपने उप-कानून हैं। बिहार के शहरी विकास विभाग के निदेशों के अनुसार, बिहार के सभी प्रमुख शहरों को विकेंद्रीकृत ठोस अपशिष्ट प्रबंधन का मुजफ्फरपुर मॉडल अपनाना होगा।

बिक्री के लिए रखे खाद के पैकेट

मुजफ्फरपुर के महापौर/मेयर के नेतृत्व में स्वच्छता अभियान और वृक्षारोपण

टाउन हॉल के पास मॉडल प्रसंस्करण इकाई में की गई स्थानीय मधुबनी चित्रकारी

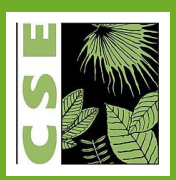

FOR MORE INFORMATION
https://www.cseindia.org/muzaffarpur-8962

Centre for Science and Environment
41 Tughalakabad Institutional Area, New Delhi- 1100 62
Ph.no.: 011-29955124,29956394